विचार बिन्दु

मनुष्य तो दुर्बलताओं की प्रतिमा है जिसमें देवत्व और दानवत्व दोनों का ही समावेश है। –हितोपदेश

जल का गिरता स्तर चिंता का सबब

आज दुनिया का बड़ा हिस्सा जल संकट से परेशान है। खासकर साफ पानी का संकट सबसे ज्यादा है। विश्व में चहुंमुखी विकास का दिग्दर्शन हो रहा है। किंतु स्वच्छ जल मिल पाना कठिन हो रहा है। साफ जल की अनुपलब्धता के चलते ही जल जनित रोग महामारी का रूप ले रहे हैं। इंसान जल की महत्ता को लगातार भूलता गया और उसे बर्बाद करता रहा, जिसके फलस्वरूप आज जल संकट सबके सामने है। पृथ्वी का तीन चौथाई भाग पानी से ढका है मगर इस जल का 99 प्रतिशत पानी पिया नहीं जा सकता और पीने योग्य पानी पृथ्वी पर मात्र एक प्रतिशत ही है जो नदियों, तालाबों, झीलों में ही मौजूद है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार जल, टिकाऊ विकास के लिए बेहद अहम है। सुरक्षित व स्वच्छ पानी तक पहुँच एक बुनियादी मानव अधिकार है। आज जल संकट एक वैश्विक चुनौती है। वर्तमान में, विश्व भर में अरबों लोगों की स्वच्छ पानी उपलब्ध नहीं है। हर साल अनुमानत: आठ लाख लोगों की मौत, ऐसी बीमारियों के कारण हो जाती है जो असुरक्षित पानी, अपर्याप्त स्वच्छता और साफ़-सफ़ाई की कम आदतों के कारण फैलती हैं। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, लगभग 4 अरब लोग साल में कम से कम एक महीने तक पानी की भारी कमी का अनुभव करते हैं। लगभग 1.6 अरब लोग दुनिया की आबादी का लगभग एक चौथाई स्वच्छ और सुरक्षित जल आपूर्ति तक पहुंचने में समस्याएं हैं। इस सदी के मध्य तक दुनिया में लगभग तीन अरब लोग ऐसे होंगे जिनके पास पीने का साफ पानी नहीं होगा। शोधकर्ताओं ने एक विस्तृत अध्ययन के बाद कहा है कि नदियां इतनी दूषित हो चुकी होंगी कि उनका पानी इंसान और वन्य जीवों के लिए 'असुरक्षित' हो जाएगा।

राष्ट्रीय जल आकदमी के अनुसार सालना देश में वर्षा और बर्फबारी से 4000 अरब घन मीटर पानी प्राप्त होता है। साल 2023 की आकलन रिपोर्ट के अनुसार पूरे देश के लिए कुल वार्षिक भूजल पुनर्भरण 449.08 अरब घन मीटर है। यानी हमें जितना बारिश जल प्राप्त हो रहा है, उसका 11 फीसदी जल हम संरक्षित कर पा रहे हैं और शेष पानी नाली नदियों से बहकर समुद्र में चला जा रहा है। पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश में भूमिगत जल स्तर गिरता जा रहा है। वही राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, ओडिशा जैसे राज्यों में समस्या गंभीर है। महाराष्ट्र के विदर्भ, उत्तरप्रदेश, मध्य प्रदेश, बुंदेलखंड में पानी की समस्या गंभीर बनती जा रही है। अब सवाल उठता है कि क्या हम केवल 11 फीसदी जल संरक्षण कर विकसित राष्ट्र की कल्पना कर सकते हैं। क्योंकि अपने देश में सिंचाई के लिए सबसे ज्यादा भूमिगत जल का उपयोग होता है जो कुल सिचाई जल की लगभग 90 फीसदी है।

मानव को सब मालूम होते हुए भी जल को बिना सोचे-विचारे हमारे जल-स्त्रोतों में ऐसे पदार्थ मिला रहा है जिसके मिलने से जल प्रदूषित हो रहा है। जल हमें नदी, तालाब, कुएँ, झील आदि से प्राप्त हो रहा है। जल की उपलब्धता को लेकर वर्तमान में भारत ही नहीं अपितु समूचा विश्व चिन्तित है। जल ही जीवन है।

दुनिया का 70 फीसदी हिस्सा पानी से घिरा है, लेकिन उसमें से पीने योग्य पानी लगभग तीन फीसदी ही है। 97 फीसदी पानी ऐसा है जो पीने लायक ही नहीं है। अब तीन फीसदी पानी पर पूरी दुनिया जीवित है। जल संसाधन मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों से पता चलता है कि भारत में एक वर्ष में उपयोग किए जाने वाले जल की शुद्ध मात्रा अनुमानित 1,121 बिलियन क्यूबिक मीटर है। जबकि वर्ष 2025 में पीने वाले पानी की मांग 1093 और 2050 तक बढ़कर 1447 बीसीएम तक पहुंच सकती है। 1.35 अरब से अधिक की आबादी के बावजूद भारत के पास दुनिया के ताजे जल संसाधन का केवल 4 प्रतिशत ही है। वहीं संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में जल संकट लगातार गहराता जा रहा है। कई राज्य हैं जो भूजल की कमी के चरम बिंदु को पार कर चुके हैं। रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया कि उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में 2025 तक गंभीर रूप से भूजल संकट गहरा सकता है। जल के बिना मानव जिन्दा नहीं रह सकता। क्योंकि मानव शरीर का एक बड़ा हिस्सा जल होता है। यह सब मानव को मालूम होते हुए भी जल को बिना सोचे-विचारे हमारे जल-स्त्रोतों में ऐसे पदार्थ मिला रहा है जिसके मिलने से जल प्रदूषित हो रहा है। जल हमें नदी, तालाब, कुएँ, झील आदि से प्राप्त हो रहा है। जल की उपलब्धता को लेकर वर्तमान में भारत ही नहीं अपितु समूचा विश्व चिन्तित है। जल ही जीवन है।

जल के बिना सृष्टि की कल्पना नहीं की जा सकती। मानव का अस्तित्व जल पर निर्भर करता है। पेयजल का मुख्य स्त्रोत भूगर्भ जल ही है। भूजल वह जल होता है जो चट्टानों और मिट्टी से रिस जाता है और भूमि के नीचे जमा हो जाता है। जिन चट्टानों में भूजल जमा होता है, उन्हें जलभृत कहा जाता है। भारी वर्षा से जल स्तर बढ़ सकता है और इसके विपरीत, भूजल का लगातार दोहन करने से इसका स्तर गिर भी सकता है। एक सर्वेक्षण अनुसार धरती का तीन चौथाई हिस्सा पानी से ढका हुआ है अर्थात लगभग 71 प्रतिशत पानी धरती के ऊपर मौजूद है और 1.6 प्रतिशत पानी धरती के नीचे नीचे है। जो पानी धरती के ऊपर मौजूद है, वह पानी पीने लायक नहीं है। शेष 3 प्रतिशत पानी पीने लायक है, जिसमें से 2.4 प्रतिशत पानी उत्तरी और हिस्से और ग्लेशियर में बर्फ के रूप में जमा हुआ है। सिर्फ 0.6 प्रतिशत पानी ही है, जो नदी और तालाब में मौजूद है जो पीने लायक है। यही 0.6 प्रतिशत पानी बढ़ती हुई आबादी और प्रदूषण के कारण पर्याप्त नहीं है, इसलिए धरती के नीचे जो पानी मौजूद है, उस पानी की भी बहुत ज्यादा आवश्यकता है।

भूजल की वर्तमान स्थिति को सुधारने के लिये भूजल का स्तर और न गिरे इस दिशा में काम किए जाने के अलावा उचित उपायों से भूजल संवर्धन की व्यवस्था हमें करनी होगी। पानी की कमी के चलते निरन्तर खोदे जा रहे गहरे कुओं और ट्यूबवेलों द्वारा भूमिगत जल का अन्धाधुन्ध दोहन होने से भूजल का स्तर निरन्तर घटता जा रहा है। देश में जल संकट का एक बड़ा कारण यह है कि जैसे-जैसे सिंचित भूमि का क्षेत्रफल बढ़ता गया वैसे-वैसे भूगर्भ के जल के स्तर में गिरावट आई है। भूजल दोहन के अंधाधुंध दुरुपयोग को यदि समय रहते रोका नहीं गया, तो आने वाली पीढियों को इसके भयानक परिणाम भुगतने होंगे। सरकार को जनता में जागरूकता लाने के लिए विशेष प्रबन्ध और उपाय करने होंगे। आवश्यकता इस बात की है कि हम जल के महत्व को समझे और एक-एक बूंद पानी का संरक्षण करें तभी लोगों की प्यास बुझाई जा सकेगी।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

बढ़ता तापमान हमें कब तक झुलसाएगा...

अविनाश जोशी

हर वर्ष पिछले वर्षों की तुलना में अधिक गरम एवम असहनीय तापमान भरा वर्ष प्रतीत होता है निसंदेह मोसम वैज्ञानिक बहुत कुछ आंकड़ों एवम शोध भरे विचार प्रस्तुत करते है लेकिन सम्पूर्ण विश्व प्रकृति से खिलवाड़ कर ग्लोबल वार्मिंग के खतरे को नजर अंदाज कर अपने दैनिक जन जीवन को तकलीफदेह स्थिति में धकेल रहा है एवम कार्बन उत्सर्जन को बड़ावा देने वाले सभी उपकरणों का भरपूर उपभोग करता है। प्रकृति के स्वभाव से विपरीत किया गया हर कार्य किसी न किसी समय विकराल रूप ले के विध्वंस का कारण बनता है यही कारण है की तापमान की इस अनियंत्रित छलांग को हम अपने नियत्रण में ला ही नहीं पा रहे है।

आजकल एक शब्द का बार बार जिक्र आता है 'ग्लोबल वार्मिंग' जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, धरती के वातावरण के तापमान में लगातार हो रही विश्वव्यापी बढ़ोतरी को ग्लोबल वार्मिंग कहा जा रहा है। हमारी धरती सूर्य की किरणों से ऊष्मा प्राप्त करती है। ये किरणें वायुमण्डल से गुजरती हुई धरती की सतह से टकराती हैं और फिर वहीं से परिवर्तित होकर पुन: लौट जाती हैं। प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन और मानवीय क्रियाओं के कारण वायुमंडल में कार्बन-डाइऑक्साइड, मीथेन आदि गैसों की मात्रा बढ़ती जा रही है जिससे पूरे विश्व में ग्लोबल वार्मिंग का वातावरण बनता जा रहा है। कार्बन डाई-ऑक्साइड जैसी गैसें ऊष्मा को रोककर पृथ्वी को गर्म रखने का कार्य करती हैं। शहरी इलाकों में गर्मी की समस्या विशेष रूप से चरम पर है, जहां शहरी ऊष्मा का प्रभाव शहरों को उसके आसपास के इलाकों से ज्यादा गर्म बना देता है वही शहरी गर्मी का प्रभाव प्राकृतिक वनस्पतियों के कंक्रीट एवं डामर से प्रभावित होने और वाहनों, उद्योगों एवं एयर कंडीशनरों से अपशिष्ट ऊष्मा के उत्सर्जन के कारण भी हो सकता है। शहरी गर्मी प्रभावित शहर के भीतर थर्मल असमानताएं भी उत्पन्न करती है इससे गरीब एवं वंचित तबका ज्यादा पीड़ित होता है।

लगातार बढ़ रहे तापमान से दुनिया भर के मौसम निगरानी संगठनों तथा शोधकर्ताओं के माथे पर चिंता की लकीरें हैं। तत्काल हानिकारक गैसों के बेतहाशा उत्सर्जन, दूसरे सभी जिम्मेदार कारणों सहित प्रदूषण कम करने को लेकर दुनिया एकमत-एकजुट नहीं हुई, तो मानवता के विनाश के साथ प्रकृति, वायुमंडल, हरियाली, जलस्त्रोतों पर कैसा घातक असर होगा, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। यह विडंबना है कि जलवायु परिवर्तन को लेकर अब भी वैसी गंभीरता नहीं दिख रही है, जैसी अनेक विषम परिणामों के तत्काल बाद दिखनी थी।

वैज्ञानिकों के लिए यह बढ़ा तापमान बड़ी चिंता का विषय है। तापमान में मामूली उतार-चढ़ाव भी मायने रखता है। इसलिए यह भले बेहद कम लगे, लेकिन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, इसके बहुत गंभीर दुष्प्रभाव हो सकते हैं। मगर हम हैं कि जानकर भी अनजान हैं। यह न केवल बहुत बड़ी घटना, बल्कि चेतावनी भी है। इस अंतर को इस तरह भी समझा जा सकता है। जलवायु तापमान संबंधी कोई भी लेखा-जोखा, एक डिग्री के दसवें हिस्से से लेकर सौवें के अंतर तक भी टूटता है तो, असाधारण होता है। समझा जा सकता है कि तापमान में मामूली-सा लगने वाला यह उछाल कितना घातक है!

यही अंतर प्राय: मौसम का रौद्र रूप भी बनाता है। इसी से, दुनिया में कहीं जबरदस्त लू, तपन तो कहीं बाढ़, बारिश से बेहाली का माहौल बनता है। हाल में दुनिया भर के कई देशों में गर्मी, लू से बदहवासी जैसे हालात बने, जिसे दुनिया ने देखा, तो बेमौसम बारिश का कहर खुद भारत इस सितंबर में देख रहा है। वहीं दुबई में हुई बारिश ने हजारों लोगों की जान ले ली। गर्मी-सर्दी और बारिश का चक्र बुरी तरह बिगड़ गया है। अब आगे इसकी अनदेखी करना एक तरह से पृथ्वी पर मानव जीवन तथा अन्य जीव-जंतुओं, वनस्पतियों के मौजूदा अस्तित्व और उनके भावी उत्तराधिकारियों के साथ खिलवाड़ जैसा होगा। यूरोपीय स्वास्थ्य संस्थान की रपट बताती है कि विकसित पश्चिमी देशों तक में गर्मी से बचने के उपाय नाकाफी रहे। दुनिया भर में इस साल फरवरी का महीना सबसे गर्म दर्ज किया गया, जिसमें औसत तापमान 1850-1900 के बीच फरवरी महीने के औसत तापमान से 1.77 डिग्री सेल्सियस अधिक था।

यूरोपीय संघ की जलवायु परिवर्तन एजंसी 'कोपरनिकस क्लाइमेट चेंज सर्विस' (सी3एस) ने यह भी कहा कि दस्तावेजों के मुताबिक पिछले साल जुलाई से हर महीना सबसे गर्म महीना रहा है। वैज्ञानिकों ने इस असमान्य गर्मी को अल नीनो (मध्य प्रशांत महासागर में सतही जल के असामान्य रुप से गर्म होने की अवधि) और मानव जनित जलवायु परिवर्तन का मिश्रित प्रभाव बताया है।

सी3एस ने पिछले महीने कहा था कि जनवरी में पहली बार पूरे साल का वैश्विक औसत तापमान डेढ़ डिग्री सेल्सियस की परिसीमा को पार कर गया। पेरिस संधि में डेढ़ डिग्री सेल्सियस की जो सीमा तय की गई है उसका स्थायी उल्लंघन सालों के दौरान वायुमंडल के गर्म होते जाने की स्थिति को दर्शाता है। जलवायु विज्ञानियों के मुताबिक देशों को जलवायु परिवर्तन के सबसे बुरे प्रभावों से बचने के लिए वैश्विक औसत तापमान वृद्धि को औद्योगिक पूर्व काल के औसत तापमान के ऊपर डेढ़ डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने की जरूरत है। धरती का वैश्विक सतह तापमान 1850-1900 के औसत तापमान की तुलना में पहले ही करीब 1.1 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है। इस बढ़ते तापमान को दुनियाभर में रिकार्ड सूखा, वनों में आग एवं बाढ़ की वजह माना जा रहा है।

वर्ष 2023 की गर्मी सबसे गर्म तापमान की दृष्टि से दर्ज की गई थी। उपग्रह डेटा उपलब्ध होने के बाद से 45 वर्षों में अंटार्कटिक समुद्री बर्फ का स्तर रिकॉर्ड निचले स्तर पर पहुंच गया है। आर्कटिक समुद्री बर्फ का विस्तार सामान्य से काफी नीचे रहा। चरम मौसम की घटनाओं ने सभी बसे हुए महाद्वीपों को तबाह कर दिया, जिससे खाद्य असुरक्षा, जनसंख्या विस्थापन और कमजोर लोगों पर प्रभाव बढ़ गया। हालाँकि वैज्ञानिक स्पष्ट रूप से इस बात से सहमत हैं कि जलवायु परिवर्तन वास्तविक है, फिर भी इस विषय को लेकर कई मिथक और बहुत सारे भ्रम हैं। जैसे ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन पृथ्वी को ढक देता है, वे सूर्य की गर्मी को फँसा लेते हैं। इससे ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन होता है। दुनिया अब इतिहास में किसी भी समय की तुलना में तेजी से गर्म हो रही है। समय के साथ गर्म तापमान मौसम के पैटर्न को बदल रहा है और प्रकृति के सामान्य संतुलन को बाधित कर रहा है। इससे मनुष्य और पृथ्वी पर जीवन के अन्य सभी रूपों के लिए कई खतरे पैदा होते हैं।

–अविनाश जोशी,
स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक

पानी की समस्या को लेकर ग्रामीणों ने सड़क पर जाम लगाया

जाम के कारण वाहनों की कतार लग गई एवं ट्रक चालकों सहित आमजन को परेशानी का सामना करना पड़ा

राजगढ़, (निसं)। टहला मार्ग पर खरकड़ा गांव में पानी की समस्या को लेकर परेशान ग्रामीण महिला पुरुषों ने जाम लगाकर आक्रोश व्यक्त किया। इस कारण वाहनों की कतार लग गई एवं आमजन को परेशानी का सामना करना पड़ा।

जाम की सूचना पर तहसीलदार विनोद कुमार एवं नायब तहसीलदार छोटे लाल मीणा सहित थाना प्रभारी एवं जलदाय विभाग के अधिकारी मौके पर पहुंचे। जलदाय विभाग के अधिकारियों की ओर से पेयजल के लिए खोदे गए बोरवेल का कनेक्शन नहीं होने की बात सामने आई। इस पर मौके पर तहसील प्रशासन ने ट्रांसफार्मर मंगा कर बोरवेल का विद्युत कनेक्शन करवाया। आपसी समझाइश के बाद जाम खुलने पर वाहनों का संचालन शुरू हुआ। इसके बाद जलदाय विभाग के सहायक अभियंता नवीन शर्मा ने बताया कि गांव में बोरवेल हो गया मगर उसका कनेक्शन नहीं होने के कारण परेशानी थी। बुधवार को करीब दो घंटे तक लगे जाम के कारण ट्रक चालकों सहित आमजन को परेशानी का सामना करना पड़ा। इधर जलदाय विभाग की ओर से मौके पर पानी का टैंकर मंगाया जिससे लोगों ने पानी भरा। खरखड़ा ग्राम में उपाधीक्षक मनीषा मीणा, एवं तहसील प्रशासन के साथ थाना प्रभारी रामजीलाल मीणा एवं पुलिस बल की मौजूदगी में खोदे गए बोरवेल का ट्रांसफार्मर लगाकर कनेक्शन कर दिया गया।

- **जाम की सूचना पर तहसीलदार एवं नायब तहसीलदार सहित थाना प्रभारी एवं जलदाय विभाग के अधिकारी मौके पर पहुंचे**
- **जलदाय विभाग के अधिकारियों की ओर से पेयजल के लिए खोदे गए बोरवेल का कनेक्शन नहीं होने की बात सामने आई**

राजगढ़ के टहला मार्ग पर खरकड़ा गांव में जाम के कारण वाहनों की कतार लग गई।

रोडवेज की अधिकांश बसें निर्धारित स्टैंड पर नहीं रुकने से यात्री परेशान

रोडवेज बसों में सफर करने वाले अधिकांश यात्री निगम की सेवाओं से असंतुष्ट

पाटन, (निसं)। राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की बसों में सफर करने वाले अधिकांश यात्री निगम की सेवाओं से असंतुष्ट हैं जिसको लेकर समझदार यात्री चालक परिचालकों की शिकायतें उच्च अधिकारियों के मोबाइलों पर भी दर्ज करवाते हैं, परंतु निगम में बैठे उच्च अधिकारियों द्वारा शिकायतों की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया जाता, जिस कारण निगम हर वर्ष घाटे में रहता है।

अधिकांश रोडवेज की बसें डिपो से निकलने के बाद निगम द्वारा जारी किए गए बस स्टैंडों की सूची पर या तो रुकती नहीं है और रूकती है तो सवारी लेती नहीं है। यात्री परेशान होते रहते हैं, बसों के पीछे दौड़ते रहते हैं, परंतु चालक और परिचालक यात्रियों की तरफ देखते तक नहीं है। यही नहीं अधिकांश बसों के परिचालक यात्रियों के साथ बदसलूकी तक करते हैं, परंतु यात्रियों की मजबूरी रहती है कि उनके साथ या तो परिवार के सदस्य रहते हैं या फिर वे कोर्ट कचहरी के लफड़े में पड़ना नहीं चाहते जिस कारण रोडवेज बसों के चालक और परिचालकों का हौसला बुलंद रहता है। अधिकांश बसें निर्धारित किए गए बस स्टैंड पर नहीं रुकने से यात्री भी परेशान रहते हैं।

- **चालक-परिचालकों की शिकायतें उच्च अधिकारियों के मोबाइलों पर भी दर्ज करवाते हैं यात्री**

निगम द्वारा पाटन में एक्सप्रेस बसों का ठहराव व स्टैंड नियुक्त किया गया है उसके बावजूद भी सीकर, नागौर, डीडवाना, जोधपुर, बीकानेर की बसें अधिकांश बाईपास होकर निकल जाती है, जिस कारण यात्रियों को एक किलोमीटर पैदल चलकर बस स्टैंड पर आना पड़ता है। पूर्व में अनेकों बार पाटन सरपंच मनोज चौधरी ने स्थानीय प्रशासन को अवगत करवाया जिस पर स्थानीय प्रशासन द्वारा कोटपूतली डिपो, सीकर डिपो, जयपुर डिपो, जोधपुर डिपो, नागौर डिपो के प्रबंधकों को पाबंद भी किया गया। साथ ही जयपुर डिपो के मुख्य प्रबंधक को भी पाबंद किया गया। उसके बावजूद भी अधिकांश बसें बाईपास होकर निकल जाती है, जबकि यात्रियों को टिकट पाटन स्टैंड का दिया जाता है। निगम की बसों में सफर करने वाले यात्रियों को जब बाईपास पर उतार दिया जाता है तो यात्रियों को पाटन स्टैंड पर पहुंचने में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। दिन में तो जैसे-तैसे यात्री अपने गंतव्य स्थान तक पहुंच जाते हैं परंतु रात के समय में जब यात्रियों को बाईपास पर उतारा जाता है तो उनको बहुत बड़ी परेशानियों का सामना करते हुए अपने घर पहुंचना पड़ता है।

रात के समय में यात्री चालक और परिचालक से गुहार भी करते है परंतु निगम के दोनों कर्मचारी अपनी हठधर्मिता करते हुए यात्रियों के साथ बदसलूकी करते हैं। ऐसी घटनाएं रोज सुनने को मिलती है, कुछ लोग इनकी शिकायतें भी करते हैं तो कुछ लोग जानकारी के अभाव में इनकी शिकायतें नहीं कर पाते जिसके चलते चालक और परिचालकों के हौसले बुलंद रहते हैं। अधिकांश बसों में शिकायत नंबर लिखे नहीं होने से भी चालक और परिचालक बच जाते हैं, जिसके चलते निगम को हर साल घाटा उठाना पड़ रहा है।

मई दिवस पर श्रमिकों ने मांगों को लेकर रैली निकाली

भीलवाड़ा, (निसं)। भारतीय ट्रेड यूनियन सीटू के प्रान्तीय प्रतिनिधि ओमप्रकाश देवानी के नेतृत्व में श्रमिकों के ज्वलंत मुद्दों पर कलेक्ट्रेट के सामने मुखर्जी पार्क में सभी शहीदों को श्रद्धांजलि दी गयी और श्रमिकों के मुद्दों को लेकर राष्ट्रपति के नाम जिला कलेक्टर के माध्यम से ज्ञापन दिया गया।

ज्ञापन में केन्द्र सरकार द्वारा श्रम सुधारों के नाम पर कानून बनाये जा रहे है जिन्हें वापस लेने, महंगाई पर रोक लगाने, किसान विरोधी कानून वापस लेने, कोरोनाकाल में श्रमिकों को जो वापिस निकाला गया उन्हें पुन: काम पर लेने न्यूनतम वेतन 26 हजार रूपये लागू करने, ठेका प्रथा समाप्त करने सामाजिक सुरक्षा 10000 पेंशन लागू करने, मीड-डे मिल श्रमिकों, आंगनबाड़ी श्रमिकों को नियमित किये जाने, शुभ शक्ति योजना को चालु करने एवं कमठाणा श्रमिकों को दी जा रही सुविधाओं को नियमित किये जाने आदि मांगों को लेकर बैठक रखी गई व मांग पत्र दिया गया। मुखर्जी पार्क की बैठक में इंटक के साथी ओमप्रकाश शर्मा ने सिकांगो के संघर्ष के बाद शहीद हुए श्रमिकों को श्रद्धांजलि पर विचार रखे। वहीं मेडिकल रि-प्रजेन्टेटीव के श्रमिक साथी उपस्थित थे जिसमें सचिव हेमन्त पायक, रामेश्वर जाट ने देश मे चल रही मजदूर विरोधी गतिविधियों की जानकारी दी।

टेक्सटाईल श्रमिक के अध्यक्ष सोनू शर्मा, गणेश गहलोत, नरेन्द्र मराठा, सद्धाम, करण सिंह, कुलदीप सुखवाल, सोनू माली, रतन बंणजारा, जितेन्द्र शर्मा, दिनेश झा, लोकेश महावर, गजेन्द्र ने भीलवाड़ा में चल रही श्रम विराधी गतिविधियों एवं 12 घण्टे काम को लेकर रोष व्यक्त किया एवं नारेबाजी की। कमठाणा श्रमिक ने मंजू आचार्य, भंवरी विश्नोई, निर्मला विश्नोई, देउ, विमला विश्नोई, इन्द्रा देवी वैष्णव, सागर वैष्णव, ममता यादव, राधा कोली ने भी निर्माण श्रमिकों के साथ हो रहे भेदभाव को लेकर विरोध व्यक्त किया एवं श्रमिकों को सम्पूर्ण सहायता एवं लगाई गयी रोक को हटाने के लिए कहा। जनता जल योजना के श्रमिक अध्यक्ष भैरूलाल खारोल, चम्पालाल पूर्बिया, नानूराम मेनारिया, भगवान लाल, नारायण लाल, रमेश आदि कई श्रमिकों ने भी सरकार द्वारा पेयजल योजनाओं के बारे में श्रमिकों को नियमित किये जाने को लेकर मांग रखी। उसके बाद सभी श्रमिकों को मजदूर दिवस पर मिठाई वितरित की गई एवं खुशी जाहिर करते हुए कार्यक्रम के अन्त में मुखर्जी पार्क से रैली निकाल कर जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय के बाहर प्रदर्शन किया गया और राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन दिया गया।

राशिफल गुरूवार 2 मई, 2024

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, धनिष्ठा नक्षत्र रात्रि 1:49 तक, शुक्ल योग सांय 5:19 तक, तैतिल करण दिन 2:57 तक, चन्द्रमा आज दिन 2:33 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मीन, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मेष, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज महापात योग सांय 7:20 से रात्रि 11:35 तक रहेगी। पंचक दिन 2:33 से आरम्भ होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:30 तक, चर 10:46 से 12:34 तक, लाभ-अमृत 12:34 से 3:40 तक, शुभ 5:18 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:52, सूर्यास्त 6:56

मेष
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

सिंह
स्वास्थ्य संबंधित परेशानी से राहत मिल सकती है। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। व्यावसायिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

धनु
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

मकर
व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक योजना का क्रियान्वयन होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक मामलों में उचित सहयोग मिलेगा।

मिथुन
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा नहीं है। व्यावसायिक मामलों में जल्दबाजी करना ठीक रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

तुला
परिवार में धार्मिक-सामाजिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक बनी रहेगी।

कुंभ
परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

कर्क
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृश्चिक
परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मीन
आर्थिक/वित्तिय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात अनावश्यक धन खर्च होगा और मन का असंतोष बढ़ेगा।